BA Part II (Sub/Hons)

Dr Chiranjeev Kr Thakur
Assistant Professor (GT)
Department of Sociology
V.S.J College Rajnagar

Lecture XI

सामाजिक समस्याओं के निवारण संबंधी उपागम

Approaches to solutions of Social Problems

सामाजिक समस्या के निराकरण में तीन उपागमों को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

1) बहुकारकवादी उपागम :- इस उपागम के अनुसार कोई भी सामाजिक समस्या किसी एक कारण से नहीं बल्कि अनेक कारणों के समन्वय से उत्पन्न होती है। उदाहरण: यह मानना कि भारत में 60 प्रतिशत अपराध चोरी, डकैती व राहजनी से संबंधित होते हैं इसलिए निर्धनता ही अपराध का कारण है तो सभी निर्धन व्यक्ति अपराधी होते अथवा धनी व्यक्तियों में हमें अपराध बिल्कुल नहीं मिलता, परन्तु ऐसा नहीं है। अतः अपराध का कारण केवल निर्धनता न मानकर अनेक सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और

2020-8-8 20:59

औद्योगीकरण आदि कारक बताए जाते हैं। इस विचार को बहुकारकवादी विचार कहा गया है।

2) सापेक्षिकता उपागम => इसके अनुसार प्रत्येक सामाजिक समस्या का समय और स्थान से अभिन्न संबंध होता है। कोई सामाजिक स्थिति हानिकारक और गंभीर है अथवा नहीं, यह अमुक समाज के विवेक पर आधारित है। जिस समस्या को एक समाज में गंभीर माना जाता है, आवश्यक नहीं कि अन्य समाजों में भी वह समस्या गंभीर मानी जाती हो। उदाहरण के लिए जनसंख्यावृद्धि हमारे लिए अति गंभीर समस्या है परन्तु शायद कनाडा के लिए इतनी नहीं है। इसी तरह प्रजातीय संघर्ष की समस्या जितनी कम समय अमरीका अफ्रीका में मिलती है, उतनी अन्य देशों में नहीं मिलती। फिर जो समस्या आज मानी जाती है, आवश्यक नहीं कि सदा इसको समस्या ही समझा लिया जाए।

2020-8-8 20:59